Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

35

राजस्थान के लोकनृत्य : सांस्कृतिक विरासत

जालमसिंह जे. राजपुरोहित

लोक नृत्य शारीरिक अंग-उपांगों का कलात्मक रूप है, जो विभिन्न वाद्ययंत्रों की मंत्रमुग्ध कर देने वाली धुनों पर लयबद्ध, शारीरिक गति, घुमाव और संतुलन के साथ किया जाता है। यह कला के साथ-साथ कौशल भी है। नृत्य को सुनिश्चित नियमों से किया जाए तो शास्त्रीय नृत्य कहलाता है। लोकनृत्य शास्त्रीय नृत्यों की तरह व्याकरणिक नियमों और मर्यादों से परे होते हैं। "लोकनृत्यों के आधार पर ही शास्त्रीय नृत्य विकसित हुए है, परन्तु यह समझना भी गलत है कि नृत्यों की चरम सीढ़ी शास्त्रीय नृत्य है और उसकी निम्न सीढ़ी लोकनृत्य।"[1] अर्थात लोकनृत्य किसी नियमों में बंधे नहीं होते हैं, मन के आह्लाद एवं स्वांत सुख के लिए किया जाता है। इन लोकनृत्यों को देशी नृत्य भी कहा जाता है। लोकनृत्य विभिन्न अवसरों जैसे तीज, त्यौहार, विवाह, मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रतजगा, जागरण आदि विशेष उत्सव पर किए जाते हैं। ग्रामीण जन समुदाय या सामान्य जन अपने क्षेत्र विशेष से सम्बन्ध लोक देवी-देवताओं के प्रति आस्था, भक्ति एवं उनका सम्मान और विशेष अवसरों पर आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भी करता है।

लोकनृत्यों पर प्रदेश की भौगोलिक (पहाड़, नदियाँ, वन, मरुस्थल और जलवायु) स्थिति, सामाजिक वातावरण आदि का व्यापक प्रभाव पड़ता है। राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान विश्व पटल पर अद्वितीय है। राजस्थान की समृद्ध संस्कृति, परम्परा, रंग-रंगीली वेशभूषा, लोकनृत्य और लोकगीत के लिए विश्वभर में विख्यात है, जो राजस्थान के जनमानस को गौरवांवित होने का अवसर देती है। "लोकनृत्यों में जन-जीवन की परम्परा, उसके संस्कार तथा जनता का आध्यात्मिक विश्वास निहित होता है। यही कारण है कि लोकनृत्यों की आयु लम्बी तथा उद्गमकाल अत्यंत प्राचीन होता है।"[2]

यहाँ की मुख्य विशेषताओं में जैसे लोकगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोककला, वास्तुकला, लोकचित्र शैली, लोकवाद्य, खान-पान, वेशभूषा, आभूषण, व्यंजन और भाषा इत्यादि विशेष उल्लेखनीय है। इन सारी विशेषताओं से क्षेत्र बहुत सम्पन्न एवं विराट है। लोक नृत्य राजस्थानी समाज का महत्वपूर्ण अंग है। आज भी यहाँ का जनमानस छोटे-छोटे प्रसंग पर भी ख़ुशी से नाचता-गाता है।

राजस्थानी लोकनृत्यों का वर्गीकरण:-

यहाँ के सामान्य लोगों से लेकर राजगराना के लोगों तक के विविध पारम्परिक नृत्य हैं जिनका विवरण उल्लिखित है-

1- **क्षेत्रीय लोकनृत्य -** गैर नृत्य (मेवाड़, बाड़मेर), गीदड़ नृत्य (शेखावटी), चंग नृत्य (शेखावटी), कच्छी घोड़ी नृत्य (शेखावटी), ढोल नृत्य (जालोर), बम नृत्य(अलवर, भरतपुर), धुड़ला नृत्य (जोधपुर)

2- **जातीय लोकनृत्य –**

अ. वनवासियों -

क. भील- गवरी, राई, युद्ध, नाहर, घेर, घूमर, द्विचकि, नेजा, हाथिमना आदि।

ख. गरासिया- वालर, गरबा, गैर, कूदा, लूर, मोरिया, गौर, मांदल, वृंद आदि ।

ग. सहरिया- फाग, राई, शिकारी, झेला, सांग, लहँगी, इनरपरी आदि।

आ. घुमंतुओं के नृत्य:- बंजारा, कालबेलिया, सांसी, गाड़ियालुहार, कंजर-चकरी आदि।

इ. अन्य चरी (गुजर), अग्नि (जसनाथी), कामड़ (तेरहताली)

3- **व्यावसायिक लोकनृत्य** – भवाई, तेरहताली, कच्छी घोड़ी आदि।"[3]

प्रमुख लोकनृत्य

1-घूमर नृत्य- राजस्थान का पारम्परिक एवं विश्व प्रसिद्ध लोकनृत्य है। जो भील जनजाति द्वारा माँ सरस्वती की आराधना के लिए विकसित किया गया था और बाद में राजपूतों ने इसे सहर्ष अपनाया। यह नृत्य विशेष रूप से गणगौर एवं तीज के अवसर पर किया जाता है। वर्तमान समय में सामान्य अवसर पर भी महिलाएँ यह नृत्य करती हुई दिखती है। घूमर नृत्य राजस्थान का सर्वाधिक प्रचलित व सिरमोर है। घूमर का अर्थ होता है- **'घूमना'**। इस नृत्य में दांए व बांए दोनों ओर घूमने से लहंगे का आकर्षक घेर बनता है। इस नृत्य के दौरान हाथों का लचकदार संचालन, कलाइयों व उंगलियों का घुमाव व घूमने के दौरान झुकते हुए पुनः ऊपर उठने का ढंग अत्यंत मनोरम एवं आनंददायी होता है। नृत्यांगना पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा जिसमें घाघरा, चूनर, कांचली, कुर्ती पहनकर विवाह, त्यौहार, उत्सव, मंच, राजकीय आयोजनों व विद्यालयी कार्यक्रमों आदि सभी अवसरों पर घूमर नृत्य करती है। मूलतः राजस्थान की संस्कृति में तथा राजपूती रीति-रिवाजों में महिलाएँ घूँघट डालकर पारिवारिक अवसरों पर नृत्य करती हैं तथा भाव-भंगिमाओं में एक विशिष्ट सांस्कृतिक ओज के साथ ही अपनी नजाकत व कमनीयता को दर्शाती हैं। नृत्य के मूल वाद्य शहनाई, ढोल, नगाड़ा, थाली आदि है। जिसका गीत इस प्रकार है-

"ओ म्हारी घूमर छै नखराली ए माँ, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै राठौड़ा री बोली प्यारी लागै ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै रमतां नै लाडूडौ ल्यादो ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां

©Copyright 2025 *ADRJ*. All Rights Reserved

म्हानै परदसां मत दीजौ ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां"।।"[4]

घूमर नृत्य का यह प्रमुख गीत है। इसके अलावा प्रचलित अन्य गीत भी घूमर नृत्य के दौरान गाए जाते हैं। जिसका नामोल्लेख है-

**सागर पाणी भरबा जाऊं सा निजर लग जाय*

**जला रे मूं तो राज रा डेरा निरखण आई*

**म्हारी सवा लाख री लूम गम गई ईंडोणी*

**कुणजी खुदाया कुआ बावड़ी आदि गीत प्रचलित है।"*

(राजस्थानी लोकगीत का सैद्धांतिक विवेचन, डॉ. सोहनदान चारण)

राजस्थान की परिस्थितियों में यह नृत्य बहुत पल्लवित हुआ है तथा अन्य लोकनृत्यों पर भी घूमर का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। घूमर की प्रस्तुति में भी अन्य लोकनृत्यों का मिश्रण किया जाने लगा है।

2-गैर नृत्य – यह लोकनृत्य पश्चिमी राजस्थान का सिरमोर है। होली के दूसरे दिन से लेकर शीतला सप्तमी तक नाचा-गाया जाता है। इस नृत्य को पुरुषों द्वारा लकड़ी का बड़ा डंडा (डांडिया) लेकर गोल घेरे में नाचा जाता है और नाचने वाले पुरुषों को **'गेरिया'** कहा जाता है। इसका मुख्य वाद्ययंत्र चंग, ढ़ोल, थाली और बांकिया होता है। ढोली के द्वारा बजाए जाने वाले वाद्य की थाप जिसे सामान्य, मध्यम और तीव्र गति से बजाया जाता है, उसी लय, ताल के उतार-चढ़ाव के अनुरूप गेरिये नाचते हैं। यह दृश्य अतिमोहक और मनोरम होता है। इस गेरियों की वेशभूषा भी अलबेली होती है, रंग-रंगीले साफे, कमीज, मेवाड़ में सफ़ेद अंगरखी, सफ़ेद धोती और लाल या केसरिया पगड़ी पहनते हैं। बाड़मेर में गेरिये सफ़ेद ओंगी (एक खास तरह का पहनावा) पहनते हैं, उसके ऊपर कंधे से कमर तक चमड़े का पट्टा बांधते हैं जिसमें तलवार रखने की जगह होती है। आजकल ओंगी के ऊपर लाल रंग का गोटेदार फ्रॉकनुमा परिधान पहनने का भी प्रचलन है। इस नृत्य को करने वाली प्रमुख जातियों में पुरोहित, ठाकुर, चौधरी, पटेल, माली, मेघवंशी आदि।

"धूसो बाजे रे महाराजा अभैयसिंघ रो (वाह-वाह) धूंसो वाजे रे

जोधाणे रो राजा कवर कन्हैया, हुक्म दियो रे खेलो होळी

वाह वाह घूसो वाजै रे महाराजा थारी मारवाड मे घूंसो वाजेरे

जीवणो मिसल माहि चाप कू पा, ऐ ओपे मारू रण थाळ

डावी रे मिसल ऊदा मेडतिया, जोधा है सूरा री ढाला।"[5]

3-गीदड़ नृत्य –राजस्थान के शेखावाटी (सुजानगढ़, चुरू, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़, सीकर) क्षेत्र में होली त्यौहार से लगभग एक सप्ताह तक गीदड़ नृत्य का आयोजन किया जाता है। खुले मैदान में मंडप का निर्माण कर सभी जाति वर्ग के लोग इस नृत्य में सहर्ष भाग लेते हैं। होली त्यौहार पर भक्त प्रह्लाद की स्थापना की जाती है जिसे ग्रामीण बोली में **'डंडा रोपना'** कहते हैं। इसके पश्चात इस नृत्य का श्री गणेश होता है। नृत्य प्रारम्भ करने से पूर्व नगाड़-ची मंडप के मध्य पहुँच कर प्रार्थना करता है उनके बाद नृत्य का आरम्भ होता है। यह विशुद्ध रूप से पुरुषों का नृत्य है कुछ पुरुष महिलाओं के वस्त्र धारणकर इस नृत्य में सम्मिलित होते हैं जिन्हें **'गणगौर'** कहा जाता है। पुरुष दोनों हाथों में दो छोटे लकड़ी के डंडे लेकर उन्हें आपस में परस्पर टकरा कर यह नृत्य प्रस्तुत करते हैं। इस नृत्य का मुख्य वाद्ययंत्र नगाड़ा, शहनाई, डफ एवं चंग होता है। इस नृत्य में विभिन्न वेशभूषा पहनकर विविध स्वांग रचे जाते हैं जैसे- शिव-पार्वती, राम, कृष्ण, काली, पराक्रमी योद्धा, साधु, शिकारी, सेठ-सेठानी, डाकिया-डाकन, दूल्हा-दुल्हन, सरदार, पठान, पादरी, बाजीगर, जोकर आदि। इस लोकनृत्य के मुख्य गीत जीरा, जला सैण, ढोला आदि प्रसिद्ध है-

"जला सैण रा मायळो सा जीणे अब रुत आई रे,

म्हारी जोड़ी रा जला, ओ मिरगा नैणी रा जला...

म्हे तो राज रा डेरा निरखण आई रे जला।

जला सैण राजा मायळो राज भलो राठौड़ी रे,

म्हारी जोड़ी रा जला, ओ मिरगा नैणी रा जला...

राजा मायळो राज भलो राठौड़ी रे जला।।"[6]

4-कालबेलिया नृत्य - कालबेलिया नृत्य राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है। यह नृत्य **'सपेरा'** जाति की स्त्रियों के द्वारा किया जाता है। कालबेलिया नृत्य में सिर्फ़ स्त्रियाँ ही भाग लेती हैं। राजस्थान की प्रसिद्ध लोक नृत्यांगना **'गुलाबो सपेरा'** ने इस नृत्य को विश्व पटल पर प्रसिद्धि दिलायी हैं। इस नृत्य में पुरुष **'इकतारा'** या **'तंदूरा'** लेकर महिला नर्तकी का साथ देते हैं। इस नृत्य में गजब की लोच और गति होती है, जो दर्शकों को सम्मोहित कर देती है। यह नृत्य दो महिलाओं द्वारा किया जाता है। पुरुष केवल वाद्य बजाते हैं। कालबेलिया नृत्य करने वाली महिला बहुत घेरदार वाला काले रंग का घाघरा पहनती है, जिसे कसीदे से भराई की जाती है। काँच की जरी लगी होती है और इसी तरह की ओढ़नी, काँचली (कुर्ती के निचे पहने जाने वाला अधोवस्त्र), कुर्ती होती है। नृत्यांगनाएँ नागिन-सी बलखाती हुई और फिरकी-सी घूमती हुई प्रस्तुति देती हैं। इस नृत्य के दौरान नृत्यांगनाओं द्वारा आँखों की पलक से अंगूठी उठाना, शरीर को पीछे की ओर झुकाकर मुँह से रुपये उठाना,

उल्टी चकरी खाना आदि कई प्रकार की कलाबाजियाँ दिखाई जाती है। **17 नवम्बर 2010 को यूनेस्को ने कालबेलिया नृत्य** को अभूत सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भी शामिल किया है। कालबेलिया जाति के नृत्य व्यावसायिक श्रेणी के नृत्य में सम्मिलित होते हैं। इन नृत्यों के चार प्रमुख प्रकार है-

इण्डोणी - इसमें पुंगी व खेजरी वाद्ययंत्र का प्रयोग होता है, इसमें नर्तक युगल कामुकता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनते हैं।

शंकरिया - यह प्रेम आधारित युगल नृत्य है।

पणिहारी- यह बागड़िया महिलाओं द्वारा भीख मांगते समय किया जाने वाला नृत्य है।

बगड़िया - भीख मागते समय किया जाने वाला नृत्य है।

"मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात रा, रात रा रात रा
म्हारे नैणां री उड़ादी बैरी नींद
मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात रा
गोरडी म्है तो बोल्यो अै म्हारी मौज सूं
थारे नैना री कियां उड़गी नींद
गोरडी म्है तो बोल्यो अै म्हारी मौज सूं
मोरिया थारै बागां में कांई कांई निपजै निपजै निपजै
ज्यां री आवै रे सुगंधी बास
मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात रा।।" [7]

5-भवाई नृत्य -भवाई उदयपुर संभाग का प्रसिद्ध नृत्य है। यह मूलतः मेवाड़ की भवाई जाति के पुरुषों का नृत्य है, लेकिन आजकल स्त्रियाँ भी इस नृत्य को करती है। यह राजस्थान के व्यावसायिक लोकनृत्यों में शामिल है। इसमें अनूठी नृत्य अदायगी, शारीरिक क्रियाओं का अद्भुत चमत्कार और लयकारी की विविधता अंगों-उपांगो का आकर्षक आदि अद्वितीय क्रियाएँ मनमोहक होती हैं। इसमें तेज लय के साथ सिर पर सात-आठ मटकी रखकर नृत्य करना, जमीन पर गिरे रूमाल को मुँह से उठाना, गिलासों पर नाचना, थाली के किनारों पर नृत्य, तेज तलवार व काँच के टुकड़ों पर नाचना आदि इसकी विशेषताएँ हैं। भवाई नृत्य के **जन्मदाता बाघोजी जाट** थे। इस नृत्य के मुख्य कलाकार रूपसिंह शेखावत, दयाराम, तारा शर्मा एवं अस्मिता काला आदि ने देश-विदेश में पहचान दिलाई और इसे राजस्थान के बाहर पहचान दिलाने वाली प्रथम महिला **पुष्पा व्यास** हैं। इस नृत्य के वाद्ययंत्र ढोलक, झांझ, पखावज, सारंगी और हारमोनियम मुख्य है।

"काळी रे कळायण ऊमडी ए पणिहारी जोयलो, छोटोडा छाटा रो बरसे मेह सैणाजो
आज घराउ धू धळो ए पणिहारी जोयलो, मोटोडो छाटा रो बरसे मेह सैणाजो
भर नाडा भर नाडिया ए पणिहारी जोयलो, भरियो भरियो समद तळाव सैणाओ
किणजी खुणाया नाडा नाडिया पणिहारी जोयलो, किणजी खुणाया भीम तळाव सैणाजो
सासुजो खुणाया नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो, सुसरे जी खुणायो भीम तळाव संणाजो।।" [8]

6-तेराताली नृत्य-राजस्थान के लोक देवी-देवताओं में रामदेव जी का प्रमुख स्थान है। रामदेव जी के भोपे **'कामड़'** कहलाते हैं। ये हाथ में तंबूरा/वीणा तथा मंजीरा, ढोलक की संगति देकर रामदेव जी के गीत गाते हैं तथा महिलाएँ नृत्य करती हैं। नृत्य के दौरान मंजीरे की मधुर ध्वनि से वातावरण में एक झंकार-सी छा जाती है। मंजीरा और तेराताली का अद्भुत संयोग नृत्य में दिखाई देता है। नृत्यांगनाएँ तेरह मंजीरों में से 9 को दायें पाँव पर बांधती हैं, दो मंजीरे कोहनी के ऊपर तथा दो कंधों पर बांधती हैं। इन 13 मंजीरों को, दो अन्य मंजीरे (जो हाथ में लिये होते हैं, उन्हें घूमाते हुए) से टकराकर लय व ताल के धुन, टन, टन, टन, टन की बहुरंगी ध्वनि मन को आह्लादित करती रहती है। सिर पर थाल में कलश रखकर मुँह से तलवार पकड़ती हैं तथा बैठकर, लेटकर, पाँव फैलाकर आदि विविध स्थितियों में मंजीरों को लगातार टकराकर मनोरम वातावरण सृजित करती हैं। कभी-कभी ऊंगलियों पर थाली को लगातार घुमाकर भी प्रदर्शन करती हैं। यह नृत्य 1 से 5 नृत्यांगनाएँ अर्थात एकल तथा सामूहिक दोनों रूपों में होता है। नृत्य में पारंपरिक पोषाक व आभूषण पहने जाते हैं। रामदेव जी के सैकड़ों गीत प्रचलित हैं। इस नृत्य में सम्मिलित होने वाली मुख्य जाति **कामड़** होती है। स्त्रियाँ नृत्य प्रदर्शन करती हैं और पुरुष मंजीरा, ढोलक बजाते हैं। इसके मुख्य कलाकार मांगीबाई और लक्ष्मणदास हैं। नृत्य के मुख्य वाद्य मंजीरा, तानपुरा, चौतारा आदि हैं।

"पिछ्म धरा सू म्हारा पीर जी पधारिया
घर अजमल अवतार लियो
लाछा बाई सुगना बाई करे हर की आरती
हर जी भाटी चवर डुले
वैकुंठा में रामा होवे हर की आरती।।" [9]

©Copyright 2025 ADRJ. All Rights Reserved

E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

7-डांडिया नृत्य – मारवाड़ में डांडिया नृत्य और गैर, गीदड़ नृत्य में काफी समानता है, लेकिन पदसंचालन, भाव-भंगिमा, हाव-भाव, ताल, गीत, वेशभूषा आदि में काफी अंतर होता है। यह भी लम्बे डंडे के साथ वर्तुलाकार रूप में बीस-पच्चीस पुरुष एक टोली बनाकर नृत्य करते हैं। इस नृत्य में विशेष रूप से बड़ली वाले भैरूजी महाराज को आराध्य मानकर नाचा, गाया जाता है। इस नृत्य में बजने वाले वाद्य शहनाई एवं नगाड़े होते हैं। इसे नाचते समय धमाल व होली गीत गाए जाते हैं और नाचने वालों की वेशभूषा शिवजी, रामजी, सीता, कृष्ण, राजा, रानी आदि की होती है।

8-ढोल नृत्य – पश्चिमी राजस्थान के जालोर जिले का यह प्रसिद्ध लोकनृत्य है। इस नृत्य को विवाह के अवसर पर ढोली, माली, सरगड़ा और भील जाति के पुरुषों द्वारा किया जाता है। राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री **जय नारायण व्यास** ने इसके व्यावसायिक नर्तकों को पहचान दिलवाई, स्वयं भी इस नृत्य में पारंगत थे। इस नृत्य में चार-ढोल एक साथ बजाये जाते हैं। ढोल का मुख्य वादक **'थाकना शैली'** में ढोल बजाना शुरू करता है, थाकना समाप्ति पर कुछ पुरुष विविध करतब जैसे की मुह में तलवार, कुछ हाथ में डंडे, कुछ भुजाओं पर रुमाल लटकाकर आदि के साथ लयबद्ध नृत्य केवल पुरुष करते हैं। इस नृत्य का प्रमुख वाद्ययंत्र ढोल है।

9-अग्नि नृत्य –जसनाथी सिद्ध अग्नि नृत्य का मुख्य केंद्र बीकानेर जिले का कतरियासर गाँव है और यही इस नृत्य की जन्म स्थली भी है। जसनाथी संप्रदाय के अनुयायी रात्रि जागरण में यह नृत्य प्रदर्शित करते हैं। नृत्य से पूर्व कई मन लकड़ी जला कर अंगारों का ढेर तैयार किया जाता है जिसे **'धूणा'** (पवित्र अग्नि स्थल) कहते हैं। यह अनुमानतः 7 फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा और तीन फुट ऊँचा होता है। नर्तक धूणा की तेजी-तेजी के साथ परिक्रमा करता है। गुरु की आज्ञा लेकर **'फ़तह'! 'फ़तह'!** अर्थात **विजय हो ! विजय हो!** का घोष करते हुए धधकते हुए धूणे में प्रवेश करता है। यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है और वे अनेक करतब करते हुए अंगारों पर नृत्य करते हैं। अग्नि के साथ राग और फाग का अनूठा संगम देखने को मिलता है। इस नृत्य को करने वाले विशेष रूप से जाट सिद्ध कबीले के लोग होते हैं। इसका मुख्य वाद्ययंत्र नगाड़ा है।

10-घुडला नृत्य - घुडला नृत्य जोधपुर में किया जाने वाला प्रसिद्ध नृत्य है। इसमें छिद्रित मटके में दीपक जलता रहता है, उसे स्त्री अपने सिर पर रखकर घूमर और पणिहारी रूप के चक्कर बनाकर नृत्य करती है और साथ में गीत भी गाती है। इस नृत्य को घुडले खाँ के वध और स्त्री स्वाभिमान के लिए किया जाता है। इसे विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त करवाने में जयपुर के **मणि गांगुली** और उदयपुर के **देवीलाल सामर** का मुख्य योगदान है। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के भूतपूर्व मंत्री **कमल कोठारी** ने घुड़ला को राष्ट्रीय मंच प्रदान करवाया। इस नृत्य को गणगौर के अवसर पर किया जाता है। इसके मुख्य वाद्य ढोल, थाली, बाँसुरी, चंग, ढोलक एवं नौबत हैं।

"घुड़लौ घूमैला जी घूमैला
घुड़लै रै बांधो सूत घुड़लौ घूमैला जी घूमैंला
सवागण बारै आव घुड़लौ घूमैला जी घूमैंला॥"[10]

यहाँ के लोकनृत्य न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि वे सामाजिक, ऐतिहासिक और धार्मिक परम्पराओं का जीवंत दस्तावेज है। यहाँ के लोगों ने लोकनृत्य के माध्यम से पारम्परिक संस्कारों को सांस्कृतिक विरासत के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और प्रसारित किया है। लोकनृत्य की परम्परा बहुत प्राचीन है जिसके संरक्षण और संवर्धन का कार्यभार यहाँ के समाज ने अपने कन्धों पर उठाया और आज भी यहाँ के लोग अपने रीति-रिवाज को लोकनृत्यों के माध्यम से संरक्षित कर रहे हैं। ये लोकनृत्य राजपूताना की संस्कृति, वीरता, मनोरंजन, प्रेम और धार्मिक आस्था का प्रतीक रहे हैं। राजस्थान का लोकनृत्य लोक से अन्तरंग जुड़ा होने के कारण यह सामान्य वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक अबाध गति से प्रवाहित हो रहा है। इन नृत्यों को करने वाले आज व्यावसायिक भी है, जो अपनी आजीविका यापन कर रहे हैं और विश्व पटल पर राजस्थान का गौरव बढ़ा रहे हैं। राजस्थान के लोक नृत्य घूमर, भवाई, कालबेलिया, अग्नि, ढोल आदि आज राजस्थान का हृदय है।

संदर्भ-सूची

1. लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाएँ, भारतीय लोककला ग्रन्थावली – 19, लेखक- देवीलाल सामर, पृ. 123
2. वही, पृ. 122
3. https://hindi.rajras.in/rajasthan/kala/nritya/
4. https://kavitakosh.org/ghoomar/kk
5. रजवाड़ी लोकगीत, सम्पादक एवम् अनुवादक, पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत, पृ.सं.114
6. http://www.shekhawatianchal.com/2023/02/mhari-jodi-ra-jala lyrics.html#google_vignette
7. राजस्थान का सतरंगी लोकगीत, डॉ. रणजीतसिंह चौहान, पृ.सं. 104-105
8. रजवाड़ी लोकगीत, सम्पादक एवम् अनुवादक, पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत, पृ.सं.133
9. राजस्थानी लोकोत्सव, लेखक-गींगाराम वर्मा, पृ.सं. 37
10. राजस्थानी लोक-साहित्य का सैध्दांतिक विवेचन, डॉ. सोहनदान चारण, पृ. 84